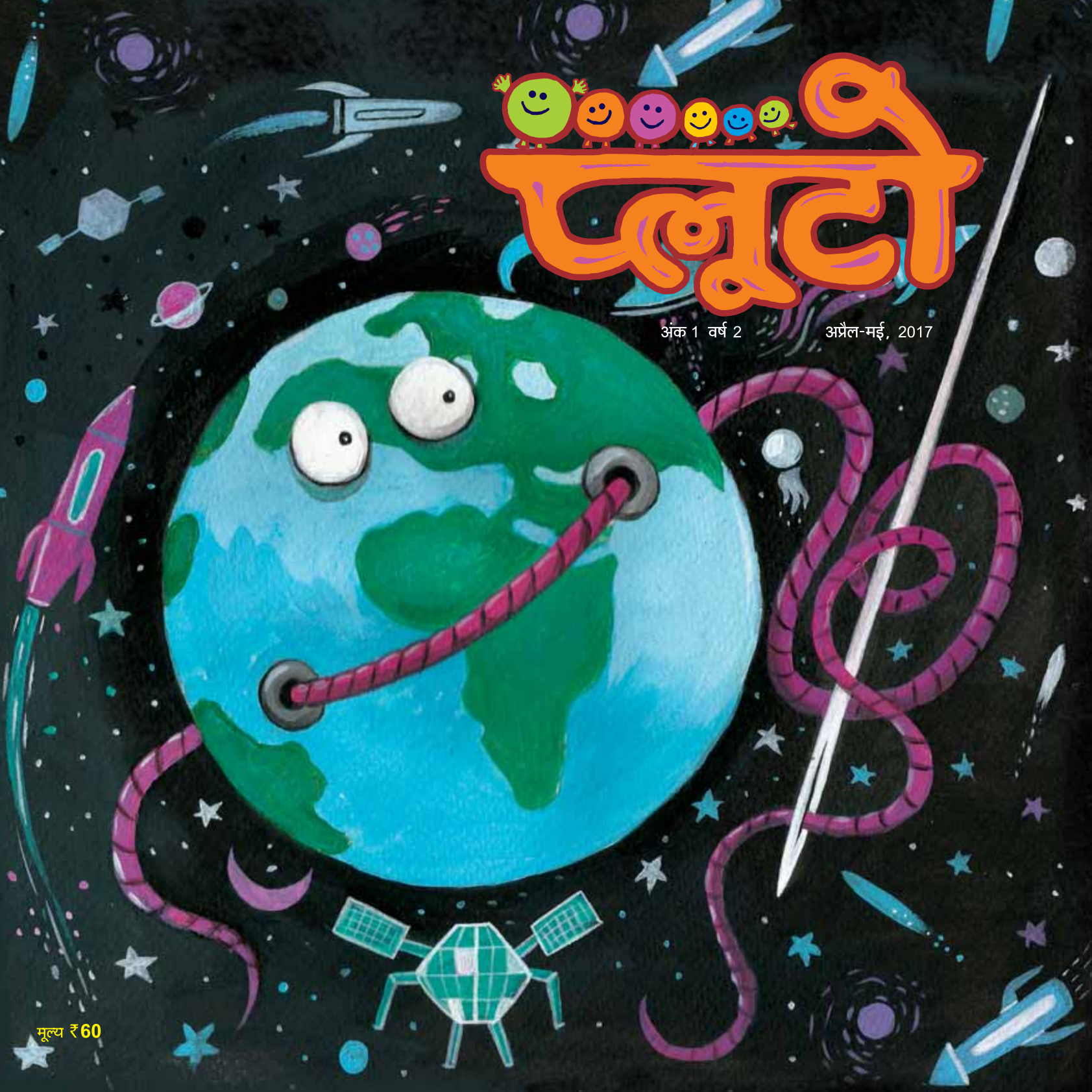


पल्लो

अंक 1 वर्ष 2

अप्रैल-मई, 2017



मूल्य ₹ 60

निकली सैर-सपाटे पर
तितली बैठी काँटे पर

चन्दन यादव



मौज लो

मनोहर चमोली मनु

रोज़ लो भई रोज़ लो
मौज लो भई मौज लो
और न मिले तो खोज लो

चित्र: सुजाशा दासगुप्ता

ये लट्टू सा दरवाज़ा
ना होता तो क्या होता।
तुम खुद तो निकल गए हो
मेरा भी तो सोचा होता।

गुलज़ार

चित्र: नीलेश गहलोत



(आरुषि से साभार)

आरुषि एक संस्था है जो शारीरिक चुनौती झेल रहे बच्चों व नेत्रहीन बच्चों के साथ काम करती है।

पिल्ला

सफदर हाशमी

नीतू का था पिल्ला एक
बदन पे उसके रुएँ अनेक
छोटी टाँगें लम्बी पूँछ
भूरी दाढ़ी काली मूँछ
मक्खी से वह लड़ता था
खड़े खड़े गिर पड़ता था

चित्र: देवब्रत घोष




क्रिकेट



हम रोज़ क्रिकेट खेलते हैं।
आसपास हमारे घर हैं और बीच में
एक छोटा-सा मैदान है। बलविन्दर
और तेजी बहुत छक्के लगाते हैं।
कभी-कभी गेंद से किसी घर की



खिड़की के काँच टूट जाते हैं। कभी कोई अखबार पढ़ रहा होता है और गेंद टप्प से उसके चश्मे पर जा लगती है। कुछ घरों से गेंद हमें वापिस मिल जाती है। उन्हें हम “नॉट आउट” घर कहते हैं। कुछ घरों से गेंद वापिस नहीं मिलती है। उन्हें हम “आउट” घर कहते हैं। और कुछ घरों से गेंद नहीं मिलती ऊपर से डाँट पड़ती है। कई बार तो हमें खेल छोड़ भागना पड़ता है। इन घरों को हम “शाउट” घर कहते हैं। 

चित्र: प्रिया कुरियन



मिन्नी और पिन्नी

स्वयंप्रकाश

ये सब आपने बनाया है?

हाँ

आप सब कुछ बना
सकते छे?

हाँ, मैं सब कुछ
कर सकता हूँ।

तो क्या आप
एक ऐसा पछड़
बना सकते छे
जो आपसे
खुद से भी न उठे?

चित्र: मिष्टुनी चौधुरी

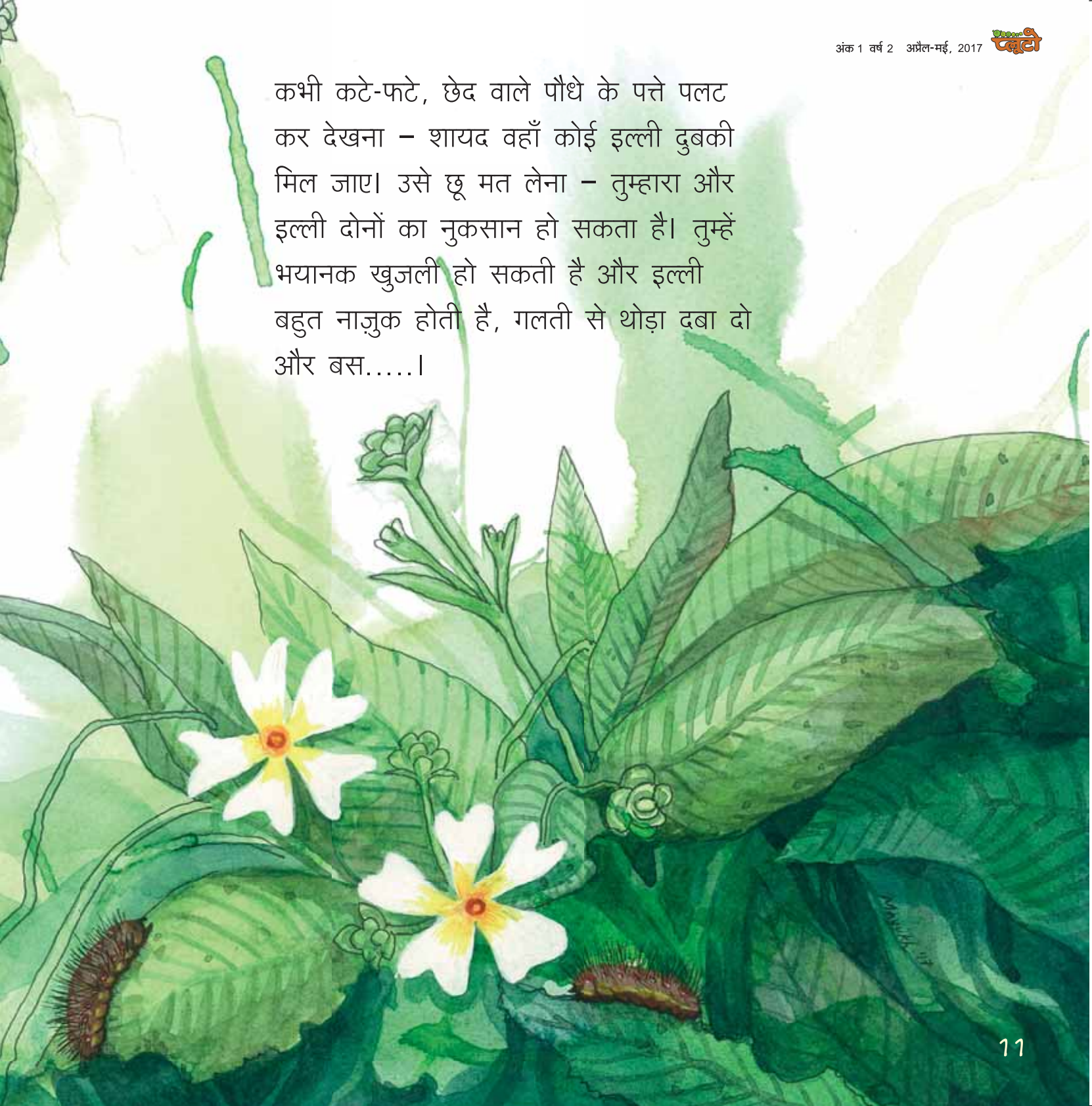
इल्लियाँ

विनता विश्वनाथन

इल्लियाँ बहुत खाऊ होती हैं। वो कुछ खास पौधों के पत्तों को ही खाती हैं। इसीलिए उनकी तितली या पतंगा माँ उन्हीं पौधों पर अण्डे देती हैं। अपने बहुत सारे पैरों से रेंगती इल्लियाँ बस खाती-चबाती रहती हैं। अकसर कटे-फटे पत्तों को देख पता चल जाता है कि वहाँ कोई इल्ली होगी। इल्लियाँ जब तितली या पतंगे में बदल जाती हैं तो बहुत कम खाती हैं। अब वे रस-भरी चीज़ें ही खाती हैं – जैसे, फूलों का रस।

चित्र: मयूख घोष

कभी कटे-फटे, छेद वाले पौधे के पत्ते पलट कर देखना - शायद वहाँ कोई इल्ली दुबकी मिल जाए। उसे छू मत लेना - तुम्हारा और इल्ली दोनों का नुकसान हो सकता है। तुम्हें भयानक खुजली हो सकती है और इल्ली बहुत नाज़ुक होती है, गलती से थोड़ा दबा दो और बस.....।



कुछ जादुई चीज़ देखना चाहते हो!
तो इल्ली को पत्ते के साथ एक
साफ-सुथरी चौड़े मुँह वाली काँच
की बोतल में डाल दो। ढक्कन में
चार-पाँच छेद कर दो। रोज़ उसी
पौधे के एक-दो पत्ते बोतल में डाल
देना और पुराने-सूखे-सड़े पत्तों को
हटा देना। बोतल में एक मुट्ठी
मिट्टी डाल देना। प्लैटो



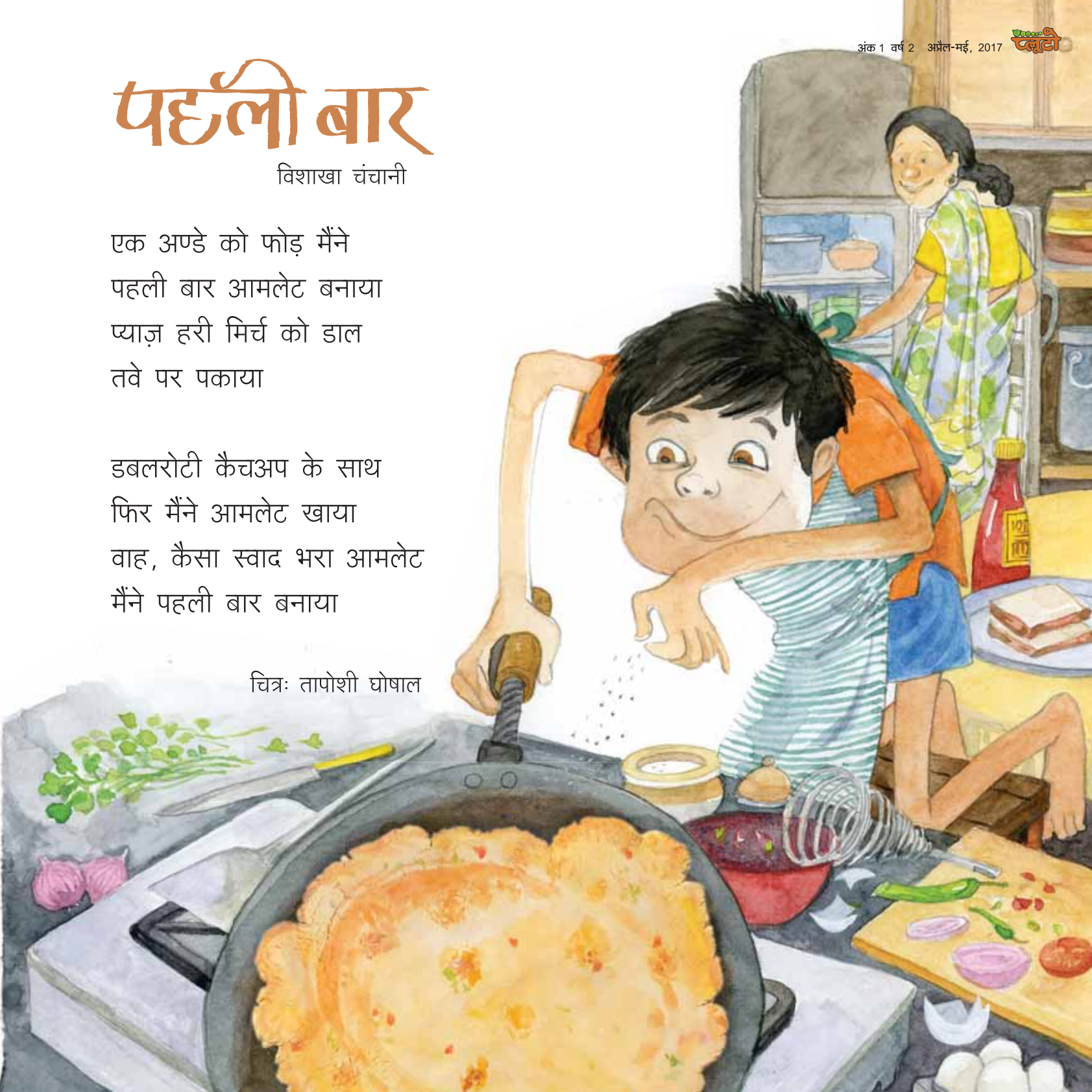
पहली बार

विशाखा चंचानी

एक अण्डे को फोड़ मैंने
पहली बार आमलेट बनाया
प्याज़ हरी मिर्च को डाल
तवे पर पकाया

डबलरोटी कैचअप के साथ
फिर मैंने आमलेट खाया
वाह, कैसा स्वाद भरा आमलेट
मैंने पहली बार बनाया

चित्र: तापोशी घोषाल





इससे पानी लेकर देख।

देख पानी हम पी रहे हैं
और डकार इसबोतल
को आ रही है।



आर्या पवार, नौ साल, मुम्बई



स्मित कबीर, सात साल, मुम्बई



ज्योति, सात साल, धारावी आर्ट सेंटर, मुम्बई

हमें तुम्हारे बनाए माँ के
बहुत सारे चित्र मिले।
शुक्रिया। उनमें से तीन को
हम यहाँ छाप रहे हैं।



नदियाँ



पानी की बेलें हैं

प्रेमशंकर शुक्ल

चित्र: नीलेश गहलोत





सुनीता

चित्र: पार्थो सेनगुप्ता

खुशी रोज़ अपनी बॉल से खेलती...



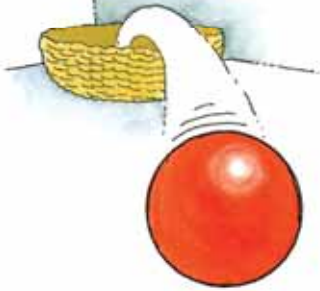
...और उसे टोकरी में रख देती।



बॉल को टोकरी में रहना अच्छा नहीं लगता...



एक दिन वो उछलकर आँगन में आ गई।



खुशी बॉल और माँ के साथ तालाब पर गई।



बॉल बहुत खुश थी।



वो खुशी की गोद से पानी में कूद गई।



तैरते-तैरते बॉल बहुत दूर चली गई। खुशी उदास मन से घर आ गई।



न नाक,
न मुँह, न दाँत,
न पेट, न पूँछ...



सब उसे देखने को दौड़ पड़े।
देखो तालाब में विचित्र जीव आया है।



यह तो
बिलकुल गोल है।



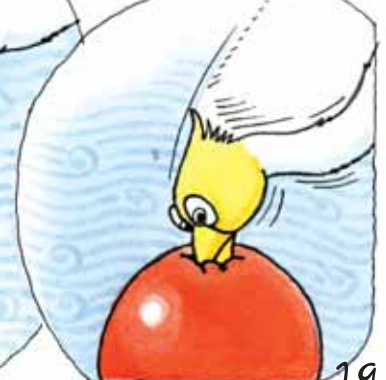
बगुला अपनी चोंच
बॉल पर मारने लगा।

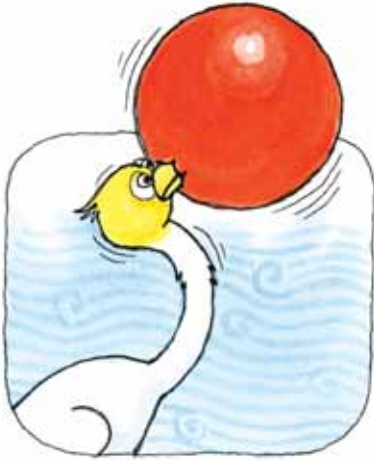


उसने खूब
कोशिश की

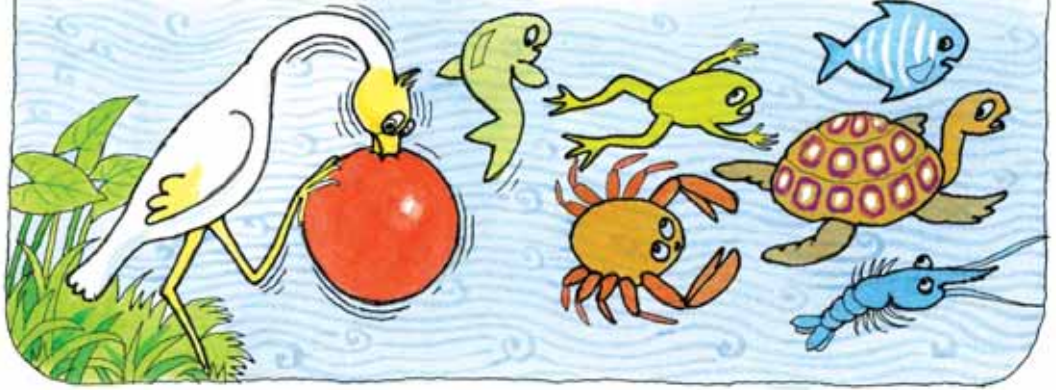


पर चोंच बॉल में
फँसी रही।

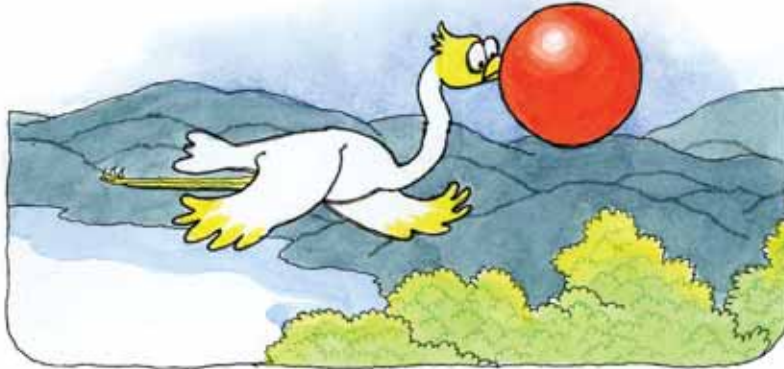




सबको लगा उस नए जीव ने बगुले को पकड़ लिया है।



बगुला उड़ गया।



तुम यह फल कहाँ से लाए हो?
मुझे दो, भूख लगी है।



बन्दर ने बॉल झपटने की कोशिश की...
...पर बॉल सम्भाल न पाया।



नीचे एक किसान सो रहा था।

वो हड़बड़ाकर उठ गया...



...और बॉल को देखकर खुश हो गया।

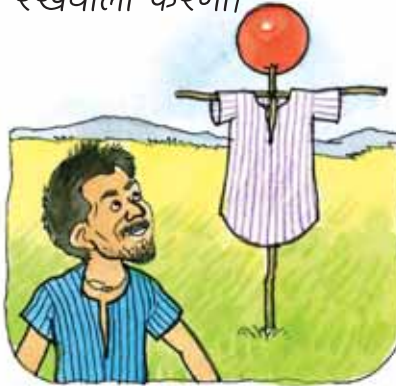


कितनी सुन्दर
बॉल है।



बिल्कुल
खुशी की
बॉल जैसी।
पर...

अब यह फसल की
रखवाली करेगी।



उधर खुशी अपनी बॉल को याद
कर रही थी...

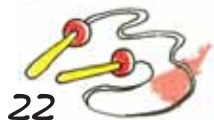


घर में मन नहीं लग रहा था
तो वो अपने पिता के
खेत में गई...



एक रंगीन कागज़ लो। उसे फाड़ कर टुकड़े
टुकड़े कर दो। अलग-अलग आकार के।
इन टुकड़ों को ध्यान से देखो।
ज़रा-सी कलाकारी से बड़ी मज़ेदार चीज़ें
बनेंगी।

हरकत
बरकत



मौका लगे तो ये किताब पढ़ना। किताब का नाम है -
डियर लेफ्ट सॉक्स एंड अदर लेटर्स - हार्वर कॉलिन्स ने इसे छापा है।

प्यारे सूरज,
तुम रोज़ सुबह-सुबह कैसे उठ जाते हो?





नींद

शशि सबलोक

“नींद आ रही है। मैं सोने जा रही हूँ...” पीलू ने ज़ोर-से कहा।

और चादर में मुँह घुसा लिया।

“और पढ़ाई...” माँ ने पूछा।

“वो मैं नींद में कर लूँगी।”

“नींद में कैसे?” बिस्तर से उसकी किताबें उठाते हुए माँ ने कहा।

“हो जाती है मुझसे। नींद में मैं सोचती रहती हूँ। मैडम ने जो-जो पढ़ाया सब पढ़ लेती हूँ। तुमसे बात भी तो सोते-सोते कर रही हूँ।

तुम क्या सोच रही थी, जाग रही हूँ!”


“और होमवर्क!” माँ ने फिर पूछा।

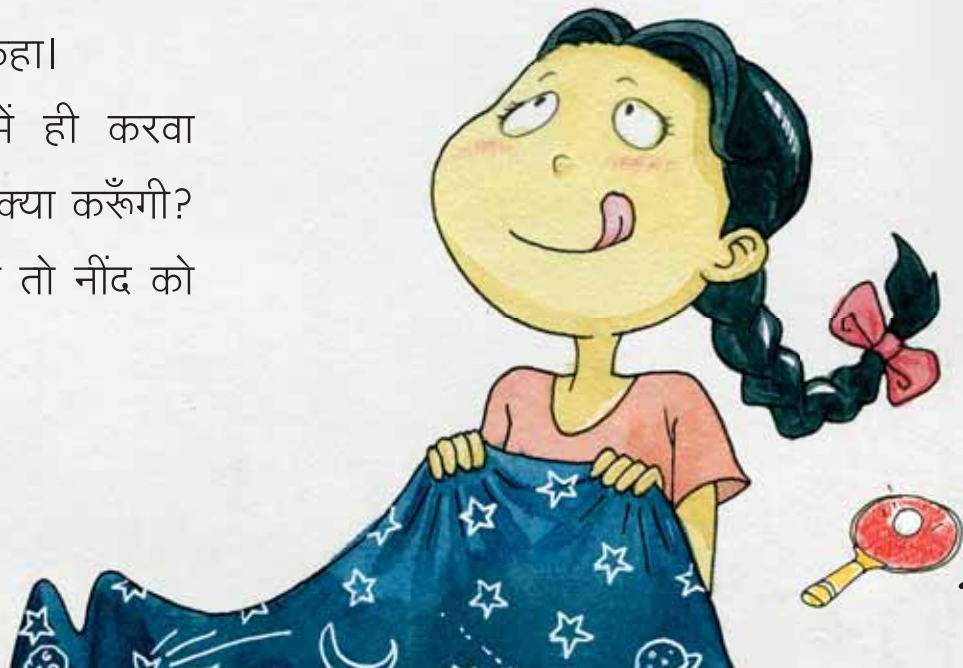
“वो भी हो जाएगा। मैंने कॉपी पास में रख ली है। नींद में कर लूँगी।”

“और खेलोगी कब?”

“वो तो मैंने नींद में जाने से पहले खेल लिया था।”

“चलो अच्छा है। अब तुम नींद में ही मटर की कचोरी खा लेना। खीर भी। आइसक्रीम भी। पर आइसक्रीम थोड़ी जल्दी खाना। टपक गई तो...” माँ ने कमरे से निकलते-निकलते कहा।

“अम्मा, सारे काम नींद में ही करवा लोगी? फिर जागने के बाद क्या करूँगी? वैसे भी आइसक्रीम गिर गई तो नींद को ठण्ड लग जाएगी...” 



चित्र: मयूख घोष

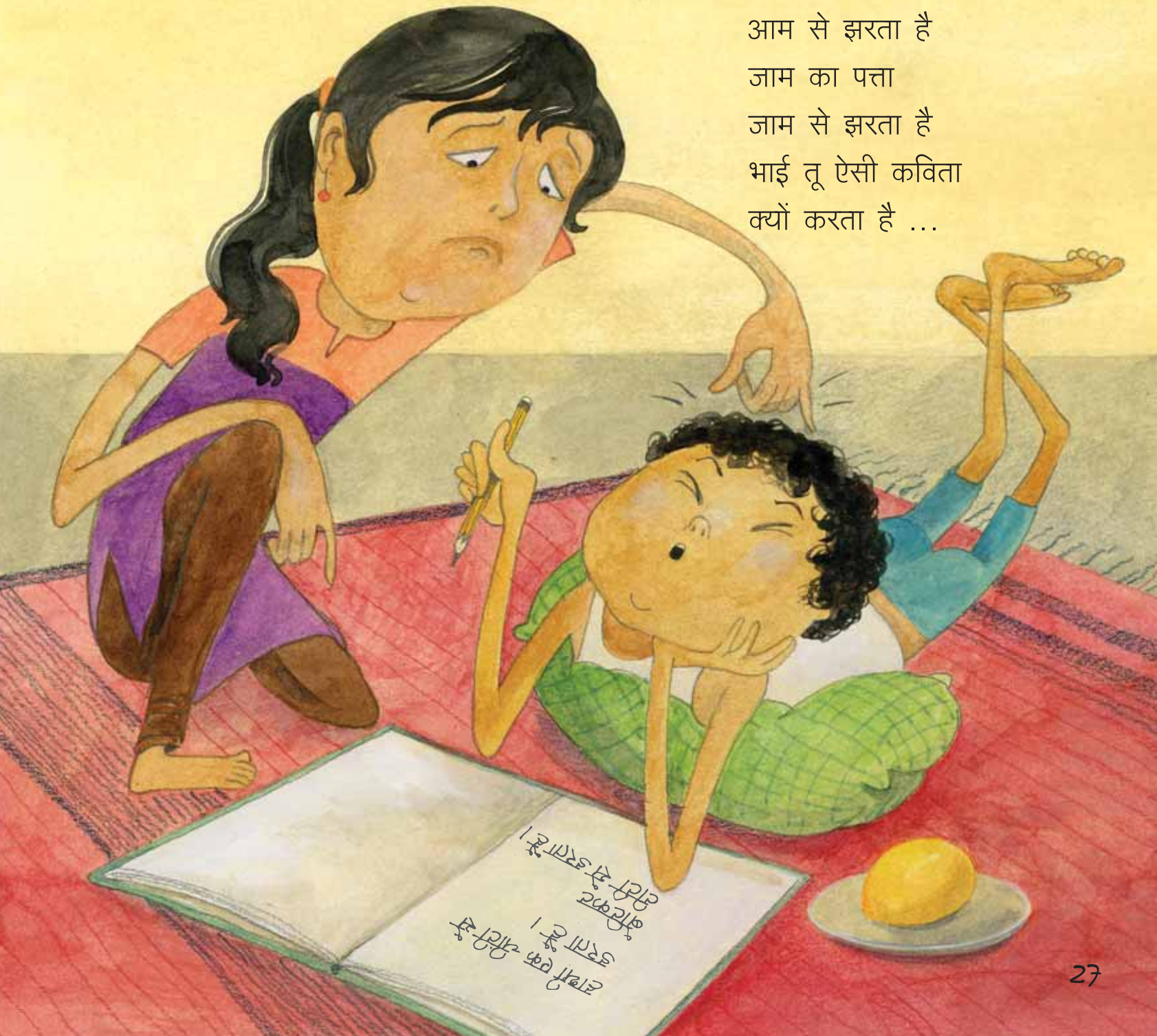


खट खट खट
हुआ लिफ्ट में पावर कट
मोबाइल में टावर कट
भालू दरवाज़े को पीटे
खट खट खट
खट खट खट

प्रभात

चित्र- हबीब अली

आम का पत्ता
आम से झरता है
जाम का पत्ता
जाम से झरता है
भाई तू ऐसी कविता
क्यों करता है ...




बड़े की बड़ी कहानी

सुशील शुक्ल

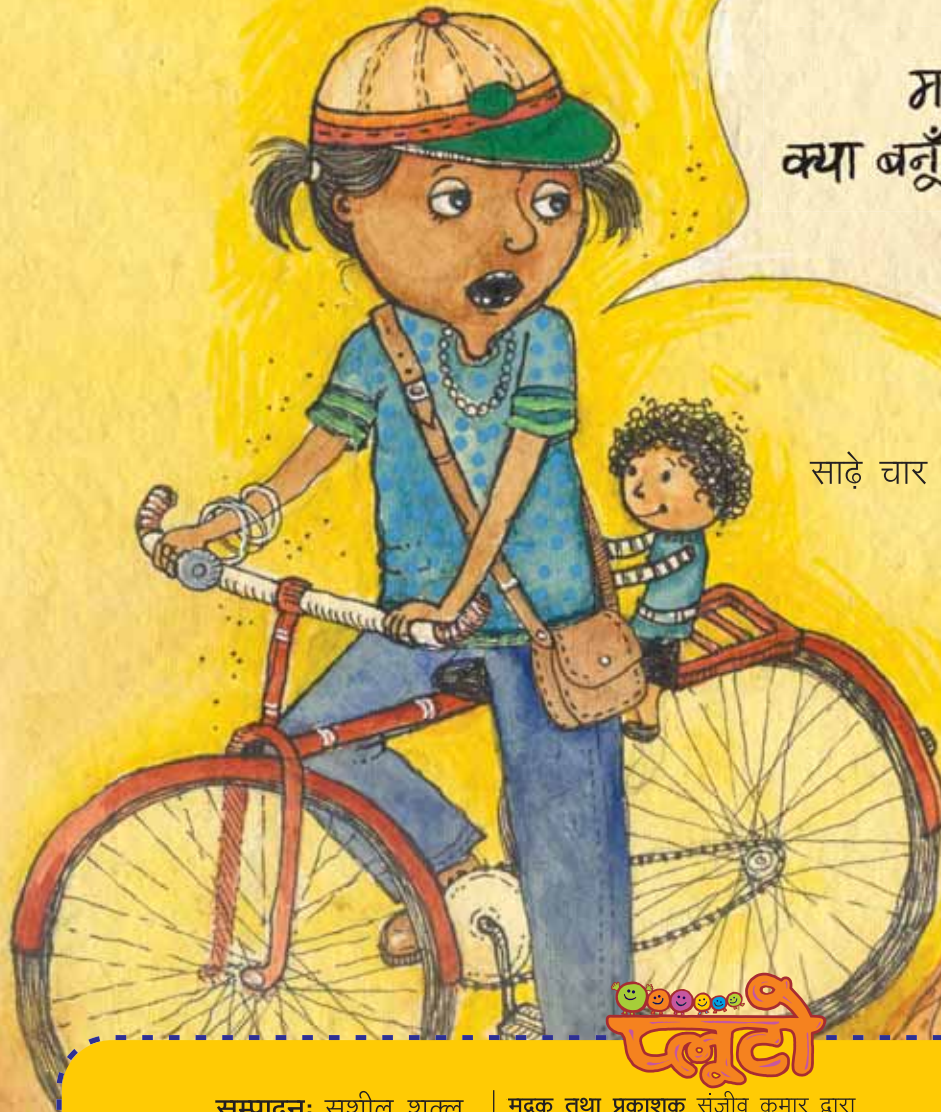
एक बड़ी थी
एक बड़े थे
बड़ी थी छोटी
बड़े बड़े थे
एक दिन बड़े ने बड़ी से पूछा,
“बड़ी, तुम बड़ी होकर क्या बनोगी?”





“अगर गड़बड़ी नहीं हुई तो
रबड़ी बन्नूंगी।
और तुम?” बड़ी ने बड़े प्यार
से बड़े से पूछा।
बड़ा बोला, “जब मैं छोटा था
तब भी बड़ा था। अब बड़ा हूँ
तब भी बड़ा हूँ। मैं इस
सवाल से घबड़ा जाता हूँ।
वैसे भी हम बड़े या तो दही
बड़े बनेंगे या साँभर बड़े। एक
बड़ा बड़ा होके फावड़ा तो
नहीं बनेगा न?” 

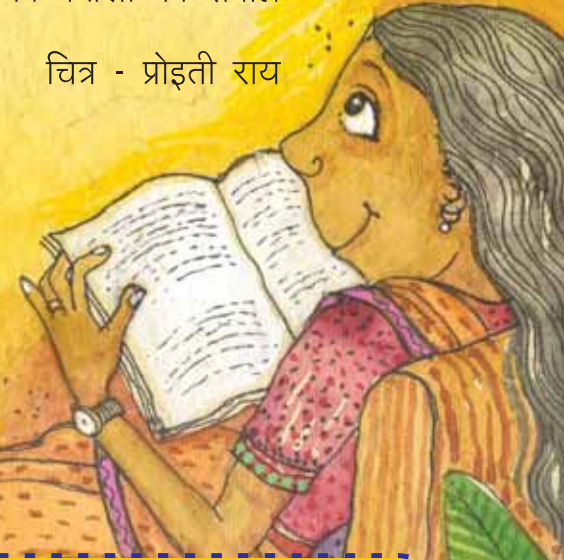




मम्मी मैं बड़ी होकर
क्या बनूँगी- लड़का या लड़की?

साढ़े चार साल की वेदांशी का सवाल

चित्र - प्रोइती राय



सम्पादन: सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

डिज़ाइन एवं चित्र: तापोशी घोषाल

आवरण चित्र: प्रिया कुरियन

मुद्रक तथा प्रकाशक संजीव कुमार द्वारा
तक्षशिला पब्लिकेशन-तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी
की इकाई के लिए
मल्टी कलर प्रेस, शेड नं. 92 डी.एस.आई.डी.सी.,
ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज 1, नई दिल्ली 110020
से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी,
नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित

प्लूटो का पता:

नॉलेज सेण्टर

सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी,
नई दिल्ली 110024

फोन: 011- 41555 418/428

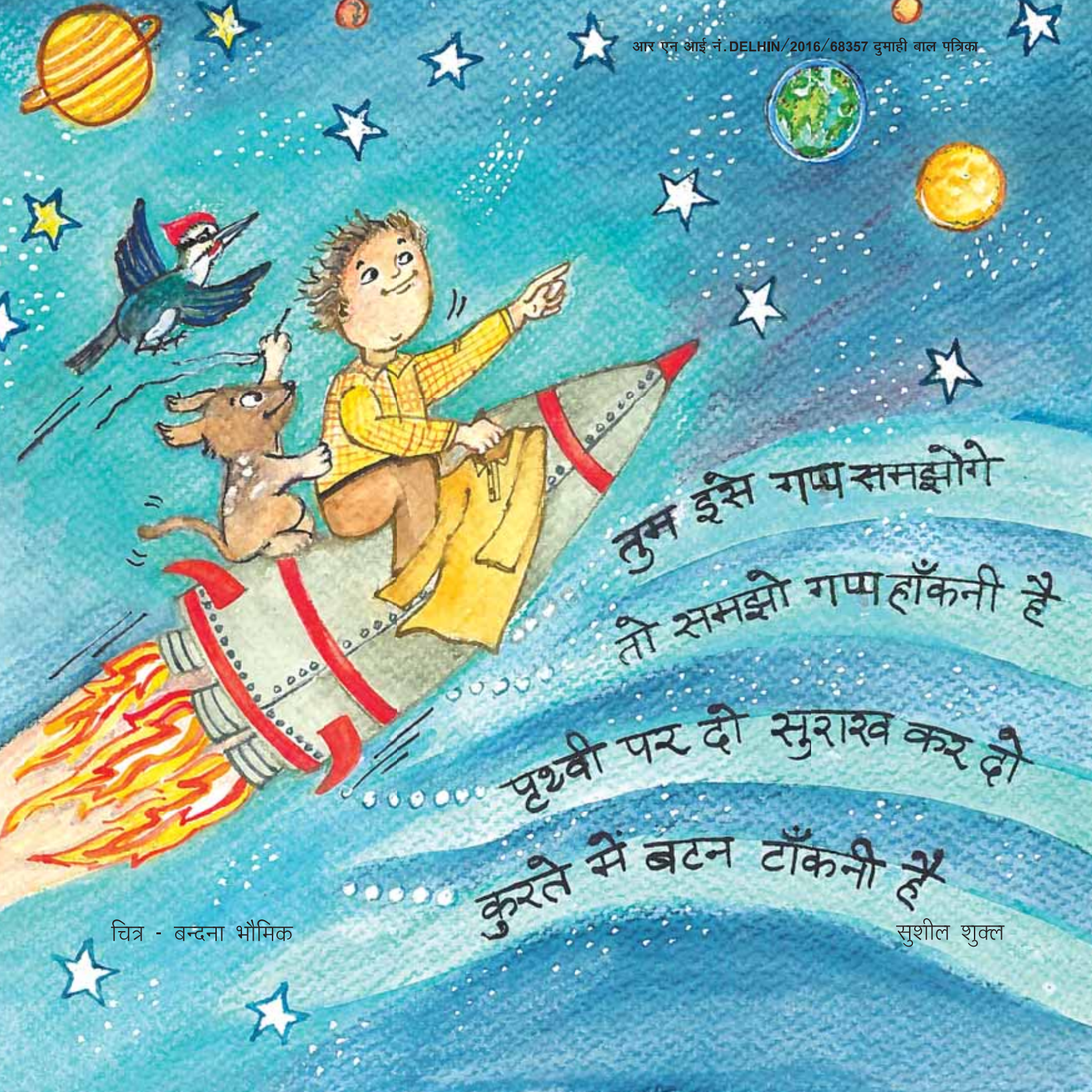
ई-मेल: pluto@takshila.net



नारियल की चिड़िया

कनक





तुम इसे गप्प समझोगे
तो समझो गप्प हाँकनी है
पृथ्वी पर दो सुराख कर दो
कुरते में बटन टाँकनी है

चित्र - बन्दना भौमिक

सुशील शुक्ल